आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 19/07/2016 ● अंक - 590 ● तारीख - 20 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण - 01 ● बुधवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

आज के दिन से अपनी संपूर्ण व्यक्तिगत शत्रुता को अपने आचरण से दूर कर दो।

तुलसीदास जी की चौपाईयाँ

दरस परस मज्जन अरू पाना,
हरइ पाप कह बेद पुराना।
नदी पुनीत अमित महिमा अति,
कहि न सकइ सारदा बिमल मति।।

भावार्थ :- वेद–पुराण कहते हैं कि श्री सरयूजी का दर्शन, स्पर्श, स्नान और जलपान पापों को हरता है। यह नदी बड़ी ही पवित्र है, इसकी महिमा अनन्त है, जिसे विमल बुद्धि वाली सरस्वतीजी भी नहीं कह सकतीं।

राम धामदा पुरी सुहावनि,
लोक समस्त बिदित अति पावनि।
चारि खानि जग जीव अपारा,
अवध तजें तनु नहिं संसारा।।

भावार्थ :- यह शोभायमान अयोध्यापुरी श्री रामचन्द्रजी के परमधाम की देने वाली है, सब लोकों में प्रसिद्ध है और अत्यन्त पवित्र है। जगत में (अण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज और जरायुज) चार खानि (प्रकार) के अनन्त जीव हैं, इनमें से जो कोई भी अयोध्याजी में शरीर छोड़ते हैं, वे फिर संसार में नहीं आते (जन्म–मृत्यु के चक्कर से छूटकर भगवान के परमधाम में निवास करते हैं)।

सद्व्यवहार की पालना ही ईश्वर भक्ति - रैदास

रैदास ने ऊँच–नीच की भावना तथा ईश्वर–भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिल जुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव–विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

'कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा।
वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा।।'

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित – भावना तथा सदव्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होंने बहुत बल दिया। अपने एक भजन में उन्होंने कहा है –

'कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै।'

उनके विचारों का आशय यही है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सफल रहता है जैसे कि विशालकाय हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है, जबकि लघु शरीर की 'पिपीलिका', इन कणों को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है।

अब ऑनलाइन निकाल सकेंगे EPF से पैसा, अक्टूबर से मिलेगी फैसिलिटी

जल्द ही आप बैंक की तरह अपने ईपीएफ अकाउंट से पैसा निकाल सकेंगे। ये फैसिलिटी अक्टूबर से ऑनलाइन मिलने लगेगी। ईपीएफओ इसके लिए एक अलग सॉफ्टवेयर तैयार कर रहा है। इसके अगले 3 महीने में शुरू होने की उम्मीद है। इस कदम से करोड़ों ईपीएफ अकाउंट होल्डर्स को फायदा होगा। फिलहाल ईपीएफ के 3.6 करोड़ एक्टिव अकाउंट होल्डर्स हैं। फाइनल स्टेज में सॉफ्टवेयर की टेस्टिंग...

– ईपीएफओ के सेंट्रल प्रॉविडेंट फंड कमिश्नर डॉ. वीपी ज्वॉय ने को बताया कि ईपीएफ अकाउंट होल्डर अक्टूबर से पीएफ विदड्रॉल के लिए ऑनलाइन अप्लाई कर सकेंगे।

– इसके लिए एक अलग से सॉफ्टवेयर डेवलप किया जा रहा है। सॉफ्टवेयर की टेस्टिंग फाइनल स्टेज में है

अभी मैनुअल है प्रॉसेस

– अभी आप मैनुअल प्रॉसेस के जरिए ईपीएफ विदड्रॉल कर सकते हैं।

– ईपीएफ विदड्राल के लिए जरूरी है कि आप कम से कम दो माह से बेरोजगार हों।

– इसके लिए ईपीएफ को मेंबर फॉर्म–10 सी और फॉर्म–19 भरना होता है।

– आपको यह फॉर्म यूएएन नंबर के साथ पुराने ऑर्गनाइनेशन में देना होता है।

– पुराना ऑर्गनाईजेशन आपकी सभी डिटेल वैरिफाई करने के बाद फॉर्म को ईपीएफ ऑफिस को भेज देता है।

– सामान्य रूप से इसमें 15 दिन से 1 माह तक का वक्त लगता है।

क्या कहते हैं पीएफ कमिश्नर?

– सेंट्रल प्रॉविडेंट फंड कमिश्नर ज्वॉय के मुताबिक, मौजूदा समय में मैनुअल प्रॉसेस के तहत हम ज्यादातर पीएफ विदड्रॉल 15 दिन के अंदर कर देते हैं।

– इसमें कुछ पीएफ विदड्रॉल तीन दिन के अंदर भी हो जाता है।

– पीएफ फॉर्म में कोई गलती है या कोई जानकारी अधूरी है तो इस कंडीशन में 15 दिन से ज्यादा वक्त लगता है।

– मौजूदा समय में बड़े पैमाने पर कर्मचारी कांट्रैक्ट पर काम करते हैं और जल्दी–जल्दी नौकरी बदलते हैं। इसकी वजह से पीएफ विदड्रॉल की रेट ज्यादा है।

ऑनलाईन ईपीएफ विदड्रॉल फैसिलिटी से ये फायदे

– ईपीएफ मेंबर्स विदड्रॉल के लिए ऑनलाइन अप्लाई कर सकेंगे।

– इसके लिए उनको अपने पुराने ऑफिस का चक्कर नहीं लगाना होगा।

– ईपीएफओ ने सभी एंप्लायर के डिजिटल सिग्नेचर पहले ही सबमिट करा लिए हैं।

– ऑनलाईन फैसिलिटी से ईपीएफ मेंबर्स कुछ ही दिन में पीएफ निकाल सकेंगे। उनको इसके लिए महीनों इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

बेटी की पहली शिक्षक होती है - माँ

जब एक औरत माँ बनती है तब वह संपूर्ण हो जाती है। माँ और बच्चे का रिश्ता दुनियाँ के सभी रिश्तों से विशिष्ट और पवित्र रिश्ता है। एक माँ और पुत्री का रिश्ता तो बहुत ही खूबसूरत होता है। जिस दिन एक नन्ही परी उसकी कोख से जन्म लेती है तो एक औरत खुद पर गर्व महसूस करती है, क्योंकि एक बेटी के रूप में उसने फिर से खुद जन्म लिया। ऐसा उसे आभास होता है और एक बेटी के रूप में वो अपना बचपन फिर से जीती है। संतान असीम संभावनाओं का मानचित्र खींचती है जीवन में। अनेक सपनों को जन्म देती है...जो बहुत ही सुंदर और मन में स्फूर्ति भरने वाले होते हैं।

जब वो नन्ही परी चलना शुरू करती है, तुतलाके बोलती है, उसकी मासूम सी मुस्कुराहट और शरारते, इन सब में वो अपना बचपन ढूँढती है। माँ और बेटी का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों से अनमोल रिश्ता है। जैसे आत्मा और परमात्मा का,दिल और धड़कन का बेटी माँ के दिल का टुकड़ा होती है। बरती रूप में माँ खुद एक नया बचपन जीती है ।

कितने मधुर अहसास छिपे होते है इस प्यारे रिश्ते में । थोड़ी सी भी तकलीफ माँ को हो तो बेटी दुखी होगी यदि छोटी सी खरोंच भी बेटी को आ जाए तो माँ तडप उठती हैं। माँ और बेटी एक अच्छी दोस्त भी होती हैं। दोनो अपनी हर छोटी से छोटी बात एक दूसरे से साँझा करती हैं।

माँ ही बेटी की पहली शिक्षक होती है ।बेटी को अच्छे संसकार माँ से ही मिलते हैं। माँ बेटी को जिंदगी में आने वाली सभी मुश्किलों से निपटना भी सीखाती है। आज की बेटी पढ़ी लिखी कमाती है, माँ के हर दुख सुख में काम आती है बेटों से बढ़ के आज वो उसके बुढ़ापे की लाठी बनती है। बहुत बार देखा है कि बेटे बूढ़े माँ बाप तक नहीं पहुँच पाते, जब जरुरत की घडी होती है किन्तु बेटियाँ हर हालत में माँ बाप तक पहुँचती है...ये रिश्ता वे अपनी खुशियों में सबसे ऊपर शुमार करती हैं। वास्तविकता तो ये है की बेटियाँ माँ और बाप के लिए खुद माँ ही बन जाती हैं

माँ बेटी का अजब है नाता
जिसमें केवल प्रेम का खाता
सब जग संबंधों से ऊँचा है
ये माँ बेटी का रिश्ता नाता
जिसको माँ ने गोद खिलाया
उसने माँ का कर्ज चुकाया
अमर प्रेम का रिश्ता है ये
ये माँ बेटी का रिश्ता नाता

अन्तरिक्ष से सम्बन्धित कुछ रोचक जानकारी

• शुक्र ही एक ऐसा ग्रह है जो घड़ी की सुई की दिशा में घूमता है।

• चन्द्रमा का आयतन प्रशान्त महासागर के आयतन के बराबर है।

• सूर्य पृथ्वी से 330,330 गुना बड़ा है।

• अन्तरिक्ष में पृथ्वी की गति 660,000 मील प्रति घंटा है।

• शनि के वलय की परिधि 500,000 मील है जबकि उसकी मोटाई मात्र एक फुट है।

• बृहस्पति के चन्द्रमा, जिसका नाम गेनीमेड (गेनीमेडे) है, बुध ग्रह से भी बड़ा है।

• किसी अन्तरिक्ष वाहन

को वायुमण्डल से बाहर निकलने के लिए कम से कम 7 मील प्रति सेकण्ड की गति की आवश्यकता होती है।

मानव मन के बोल

कर्म वह अच्छा, जिससे आमजन को लाभ मिलें।

गतांक से आगे...

अठारह हजार मंत्र याद किए बहुत तपस्या की। जिनको महाभारत के एक लाख श्लोक याद हैं उनको मैं और अधिक प्रणाम करता हूँ कि एक लाख श्लोक कितनी तपस्या की आपने महातपस्या की। आपको प्रणाम हैं। लेकिन जो भाई जो मोहन अपनी माँ के कहने पर जंगल में जोर–जोर से पुकारता हैं, गोपाल भैय्या, गोपाल भैय्या मुझे डर लग रहा हैं, गोपाल भैय्या। मेरी माँ ने कहा था, तुम गायें चराते हो। तुम नंद के लाला हो। रिश्ते में मेरे भाई लगते हो आओ न गोपाल भैय्या और जब मोहन रोने लग गया। बहुत पुकार की तो मेरे कृष्ण कान्हा मेरे योगेश्वर विश्व गुरू ब्रह्माण्ड गुरू, अर्जुन के माध्यम से हम सबको गीता का ज्ञान सुनाने वाले कृष्ण। वो द्वारकाधीश योगेश्वर यदुनाथ। आकर मोहन को बोले मोहन तुझे बहुत पुकारना पड़ा। मोहन कल इतना नहीं पुकारना पड़ेगा। आज मैं विलम्ब हो गया मोहन और वो ही गोपाल एक छोटे से पात्र में दूध दे देते हैं, तो गुरूजी की सारी कड़ाईयाँ, सारे भगुने, सारी कोठियाँ भर जाती हैं और छोटे पात्र का दूध समाप्त नहीं होता। गुरूजी मोहन को लेके कहते हैं, मोहन तेरे गोपाल से मुझे मिला दे–लाला। गुरूजी समझ गए जानते थे। मोहन का कोई भाई दूसरा परिवार में तो नहीं हैं। उसकी माँ का बेटा तो कोई नहीं हैं। अवश्य भगवान ही पधारते होंगे। जंगल में जाते हैं। मोहन फिर पुकारता हैं अबके केवल आवाज आती हैं। मोहन आज तो तेरे ज्ञानी गुरूजी बहुत ज्यादा ज्ञानी हैं। जो छोटे–बड़े में भेद करते हैं। जो दूध ज्यादा लाया था तेरे गुरूजी ने पहले उनको बुलाया। तेरे दूध के छोटे पात्र को देख के तेरा अपमान किया इन गुरूजी ने, और जब भी तूने कहा गुरूजी मेरा दूध ले लो तब गुरूजी ने कहा चुप नीचे खड़ा हो जा। सोचा अरे! देखा कैसा ये नालायक है? छोटे से पात्र में दूध लाया और जल्दी कर रहा हैं। ये तो देखो 5 किलो लाया, ये देखो 10 किलो लाया। ये मेरे पिताजी के श्राद्ध के लिए 10 किलो लाया 15 किलो लाया। पहले मैं पैसे वालों को स्थान दूं। पहले मैं राजा के लड़को को स्थान दूं और हे मोहन! तेरा अपमान किया इन्होंने। इसलिए मैं तेरे गुरूजी को दर्शन देने नहीं आऊँगा।

गुरूजी बहुत रोने लगे जब पाण्डित्य बगल गया। पाण्डित्य रखना अच्छा हैं, लेकिन तथाकथित पाण्डित्य भाव नहीं। मैं बड़ा मैं बड़ा कौनसे बड़े रस बड़े, कौनसे बड़े आलू बड़े कौनसे बड़े हम चौड़ा–सड़क सकड़ी बड़े। ये घमण्ड काम नहीं आता। आपको धन मिला हैं, परमात्मा की कृपा हो गई आप पर। आपके बंगले 10–20 हैं। मैं तो सेन फ्रांसिस्को में गया था। एक अभी–अभी वो सज्जन हो सकता हैं जीवनी पढ़े–अच्छा लगेगा। मैं जब सेन फ्रांसिस्को की होटल में था, और सेन फ्रांसिस्को से मुझे दूसरे दिन इण्डिया लौटना था। एक दिन पहले फोन आया भैय्या कैलाश जी हैं क्या? मैं वो बोल रहा हूँ अरे आप आये हुए हैं। ऐसा थोड़ी हो सकता हैं कि आप मेरे यहाँ आओ ही नहीं। मेरे यहाँ नहीं आओगे तो कैसे चलेगा? मैं आपको कार ले के लेने आता है।

अब मेरे को लगा कि कितना प्रेम हैं, कल मुझे दिल्ली भी लौटना हैं। फिर भी जब वो कार ले के आये तो मैं गद्गद् हुआ। आज भी मैं उनको प्रणाम करता हूँ और मुझे कार में बिठाकर वो अपने बंगले पर ले गये थे। 40–50 किलोमीटर दूर हैं, मेरे को कहा भाई साहब कल ही मेरी दिल्ली की फ्लाईट हैं, ऐसा तो नहीं होगा। हम आयेंगे उस समय लेट हो जायेंगे। लेट हो जायेंगे तो फ्लाईट चूक जायेगी, तो मुझे बाद का टिकिट कैसे मिलेगा? बहुत पैसा खर्च हो जायेगा, दूसरा टिकिट लेने में।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

बन्धुवर, आप इन अनजान रोगियों के लिए दवाइयों का इतना खर्च कर रहे है? इसकी प्रेरणा कहाँ से मिली आपको?

पराये दुःख से द्रवित होने वाले उन सज्जन ने, एक क्षण मेरी तरफ देखा, आँख डब डबा आई–उनकी। मेरे कन्धे पर हाथ रखा, और अतीत की यादों में खो गये। धीरे से बोले मेरा जीवन इन्हीं की धरोहर है। नहीं तो मैं आपको यहाँ दिखाई नहीं देता। आगे की मेरी जिज्ञासा को देखते हुए उन्होंने कहा–यह बात तीन वर्ष पूर्व की है। मैं जयपुर से बस द्वारा बम्बई जा रहा था, रास्ते में कब, कहाँ, कैसे क्या हुआ ? मुझे नहीं मालूम। मुझे तो होश आया तब मैं एस. एम. एस. हॉस्पीटल जयपुर के सर्जिकल वार्ड में एक बेड पर था। मुझे बताया गया कि तीन दिन पूर्व एक बस के एक्सीडेंट में गंभीर घायल होकर मैं संज्ञा शून्य हो गया था। यहाँ लाकर भर्ती कराने से अब तक मुझ पर लगभग एक हजार पाँच सौ रूपयों की दवाइयों का खर्च एक अपरिचित सज्जन ने किया, और लगातार मेरे सिरहाने बैठ कर सेवा के साथ –साथ भगवान से मेरे लिए दुआ की। कहते–कहते उन भाई साहब के पूरे चेहरे पर आँसू बहने लगे। स्वयं को संयत कर बोले – बहुत ढूँढा पर मेरे जीवन दाता उन परोपकारी महानुभाव को नहीं खोज पाया–मैं।

उन सज्जन ने इस बारे में अन्तिम वाक्य कहा। उस दिन से मैं बराबर हर अपरिचित बीमार में अपने उन जीवन दाता को ढूँढ रहा हूँ। मैं तो खोजूंगा ही, मेरे पुत्र पौत्र भी ऐसा करते रहेंगे–प्रभु कृपा से। मुझे यह विश्वास है, और वह सज्जन बढ़ गये–दूसरे बीमार की सेवा करने।

यथार्थ समाधि

1. नाक दबाकर या हठयोग से समाधि करते हैं, उसे? ना, वह तो हैन्डल समाधि कहलाती है। जब तक हैन्डल मारा तब तक चला, फिर वह समाधि उतर जाती है। ऐसी समाधि से क्या मोक्ष होता है? समाधि तो उसे कहते हैं कि चलते – फिरते, अरे! लड़ते–झगड़ते हुए भी समाधि नहीं जाए, वह है 'यथार्थ समाधि'। जहाँ आधि, व्याधि, उपाधि (बाहर से आनेवाला दुःख) नहीं हो, वह 'यथार्थ समाधि' कहलाती है।

2. यहाँ सबकुछ नया सुनने को मिलता है। रिलेटिव में दूसरी सब जगह जो सुनने को मिलता था, वह पूरा साधन मार्ग था, और यह साध्य मार्ग है। अनंत जन्मों से साधनों का ही रक्षण किया है और ध्येय निश्चित किए बगैर ध्यान करता रहता है। ध्यान तो कब हो सकता है? खुद ध्याता बन जाए तब। हम पूछें कि, 'तू कौन है?' तब कहेगा, 'मैं मजिस्ट्रेट हूँ।' अरे, ध्यान करते समय ध्याता नहीं था? मजिस्ट्रेट था? यह तो ध्याता कब बनता है कि जगत् का सबकुछ विस्मृत हो जाए तब। यह तो उसका ध्यान मजिस्ट्रेट में है, इसलिए ध्येय कहाँ से निश्चित हो? यह तो ध्येय बड़ौदा जाने का हो फिर खुद ध्याता बन जाता है कि किसमें जाएँगे? लेकिन यह तो इन्द्रिय प्रत्यक्ष है और आत्मा का तो भान ही नहीं है, और वह तो अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष है!

3. बचपन में बिल्ली को मारा हो या फिर बंदर को ईंट मारी हो तो वह सब भीतर देख सकते हैं। वह पहले के पर्याय भीतर देख सकते हैं, लेकिन यदि सामायिक ज्यादा करते हों तो। पहली बार सामायिक करने पर एकदम से ऐसा नहीं होता, लेकिन पाँच–दस–पंद्रह समायिक हो जाने के बाद बहुत सूक्ष्मता आती जाती है।

4. पहले ध्यान लगाकर दादा का स्मरण करके, एक–दो भक्ति गीत गाकर, त्रिमंत्र बोलकर और फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की स्थिरता कर लेनी है। फिर आज से लेकर बचपन तक की जो–जो घटनाएँ हुई हैं, विषय विकारी या हिंसा की घटना, झूठ–प्रपंच किए हों, वह सब जितना भी आपको दिखाई दें, आप उन सभी के प्रतिक्रमण करने की शुरुआत करना। आज से पीछे की ओर चलना है, कल किसके साथ क्या किया था, परसों किसके साथ किया था, नरसों किस के साथ किया था, अथवा बचपन से याद करना है वह जितना याद आए न, उसके प्रतिक्रमण करने हैं। वह याद आएगा, कुदरती रूप से ही याद आएगा। याद नहीं आए तो क्या करेंगे, ऐसा सोचकर आपको घबराना नहीं है।

साभार – दादाश्री (दादा भगवान)

दूसरों के दर्द को बांटने वाला ही सुखी : 'मानव'

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ बड़ी में भजन–सत्संग एवं दीनबंधु वार्ता कार्यक्रम में संस्थान संस्थापक कैला ा मानव ने कहा कि यदि हम किसी के आंसु नहीं पोछ सकते तो हमारा मनुष्य जीवन धिक्कार है। हम दूसरों के दर्द को अपनाकर ही अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के प्रांगण में समय–समय पर होने वाले सत्संग कार्यक्रमों से उपचाराधीन रोगी बंधुओं में नवीन ऊर्जा का संचरण होता है और वे आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण होकर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। इन्दौर के मेनेजमेंट गुरू विश्वास वैष्णव ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम कृष्ण कन्हैया की भक्ति कर के अपने जीवन में तनाव को कम कर सकते हैं। कार्यक्रम में भजन मण्डली ने सुन्दर प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण संस्कार चैनल पर प्रातः 10 से दोपहर 1:30 बजे तक किया गया। संचालन ओम पाल सीलन ने किया।

टूस का सूर्य मंदिर (पर्यटन स्थल)

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ बड़ी में भजन–सत्संग एवं दीनबंधु वार्ता कार्यक्रम में बुधवार को संस्थान संस्थापक कैला ा मानव ने कहा कि यदि हम किसी के आंसु नहीं पोछ सकते तो हमारा मनुष्य जीवन धिक्कार है। हम दूसरों के दर्द को अपनाकर ही अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के प्रांगण में समय–समय पर होने वाले सत्संग कार्यक्रमों से उपचाराधीन रोगी बंधुओं में नवीन ऊर्जा का संचरण होता है और वे आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण होकर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। इन्दौर के मेनेजमेंट गुरू विश्वास वैष्णव ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम कृष्ण कन्हैया की भक्ति कर के अपने जीवन में तनाव को कम कर सकते हैं। कार्यक्रम में भजन मण्डली ने सुन्दर प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण संस्कार चैनल पर प्रातः 10 से दोपहर 1:30 बजे तक किया गया। संचालन ओम पाल सीलन ने किया।

मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म श्रृंखला का षष्टम् (6) पुष्प)

स्वाभिमानता का रस

महाराणा प्रताप, शेर के दाँत गिनने वाला भरत

rt%& gYnh ?kkVh e: lej yM+;k

हम में ही कोई बने विवेकानन्द, ज्ञान की ध्वजा साथ लिए।
परमहंस श्री राम कृष्ण सम, बन धरती कृतार्थ करे।
दुष्यन्त पुत्र कोई भरत बने, दाँत सिंह के गिना करे।
बने शिवाजी छत्रपति सम, दूध सिंहनी का लाए। (82)

शेर के दाँत गिनने वाला भरत। जिस भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा, इन वीरों को प्रणाम करें। जो छत्रपति शिवाजी अपने गुरूदेव के लिए शेरनी का दूध लेकर आ गये। जिन पन्नाधाय ने अपने बेटे का बलिदान करके मेवाड़ को बचा लिया–

लगातार पच्चीस वर्ष तक, वन वन में आवास किया।
मातृभूमि की खातिर जिसने, तनमन धन बलिदान किया।
वह एकलिंग नाथ का सेवक, माँ का सत्य सपूत हुआ।
वह राणा प्रताप आज तक, इतिहासों में अमर हुआ।। (83)

बोलिए महाराणा प्रताप की जय हो। ''जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार'', इन वीरों के लिए एक बार जोर से ताली बजाईये। अपने आप को वीर रस, शौर्य रस, उत्साह रस, उमंग रस, भारत के स्वाभिमानता का रस, हमारी आत्मा के आनन्द का रस, ये रस मानव धर्म से प्राप्त होते हैं, जब ये रस मिल जाये तो महारस लगेंगे। मैं चाहता हूँ हमारे जितने संगीत के रत्न हैं, इन सबके लिए ताली बजाकर इनका अभिनन्दन कर लेते हैं। अब हम तकनीकि विभाग के जितने भी भाई – बन्धु हैं, उनका अभिनन्दन कर लेते हैं।

मन में रहे ये भाव, सेवा बने स्वभाव। आपका हमारा स्वभाव सेवामय हो जावे, मानव धर्म सफल हो जायेगा। मानव धर्म का शंखनाद हो जायेगा, पूरे विश्व में मानव धर्म की जय–जयकार होने का अर्थ है, हम अच्छे इन्सान बन जावें। ''लव ऑल–सर्व ऑल, एज मच एज यू केन, डू इट प्रजेन्टली एज यू केन'', सत्य साईं बाबा मानव धर्म के भगवान जी, उन्होंने कहा – सबको प्यार करो, सबसे स्नेह करो, जितना ज्यादा से ज्यादा कर सको, जितनी मोहब्बत से कर सको।

rt%& ikN yk vkl n[kh d

है नहीं मुमकिन की जीतें, शक्ति से एक व्यक्ति भी।
प्यार के दो बोल बोलो, चाहो तो दुनिया जीत लो। (84)

कैसी दुनिया जीतनी है बाबू? अपने मन को जीतना है, मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन, आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन। ये पुस्तक आपश्री के पास इसीलिए आ रही है, एक–एक अक्षर को ध्यान से पढ़ने की कृपा करें, इन शब्दों को मन में ग्रहण करें, दान देना हमारा फर्ज है। ''सच्ची सेवा प्रभु पूजा है, उत्तम यज्ञ विधान है, दरिद्र नारायण बनकर आता कृपा सिन्धु भगवान है'', ये धर्म की बात है।

rt%& vkt ijkuh jkgk l

कुछ भाई हैं पिछड़े पीड़ित, यह किसका अपराध है।
सदियों से जो रहे उपेक्षित, किसकी भूल प्रमाद है।
युग–युग के घावों को धोकर, मरहम हमें लाना है।
सच्ची सेवा प्रभु पूजा है, उत्तम यज्ञ विधान है। (85)

मानव धर्म महान् है। मानव धर्म वो धर्म है, जो आदिकाल से चलता आया है। जिस धर्म की शिक्षा ब्रह्माजी ने कृपा करके अपने मानस पुत्रों को दी, जिसमें नारद जी ने नारायण – नारायण नारायण करके इस धर्म को पूरी सृष्टि में फैलाया। ये वो धर्म है, जो विष्णु भगवान ने बार–बार 'जब – जब होय धर्म की हानि, बढ़ै असुर अधम अभिमानी, तब–तब प्रभु मनुज शरीरा' मनुज के शरीर को धारण करके मानवता का धर्म सिखाने के लिए मेरे प्रभु चौबीस ने अवतार लिए। कभी मत्स्य अवतार, वराह अवतार, कच्छब अवतार, नृसिंह भगवान का अवतार, श्रीराम का अवतार, वामन भगवान का अवतार, श्रीकृष्ण का अवतार, कभी नर–नारायण का अवतार, कभी श्रीहरि अवतार और कल्कि अवतार। लाला यही मानव धर्म है। शंकर भगवान से जब पार्वती जी ने कहा था – प्रभु, मैं धर्म की बात सुनना चाहती हूँ, मैं राम की कथा सुनना चाहती हूँ। राम कथा के माध्यम से ये मर्यादा धर्म की कथा शंकर भगवान ने हमारी माता पार्वती जी को सुनाई थी।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़